महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) (A
Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ का आयोजन

परंपरा और आधुनिकता पर विजय मोहन का व्याख्यान

वर्धा दि. 9 अक्टूबर 2012 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ की ओर से 'परंपरा और आधुनिकता' विषय पर आयोजित व्याख्यान में विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक डॉ. विजय मोहन सिंह ने कहा कि मान्यताएं, नियम, अनुशासन और आचार संहिताएं हमारी परम्परा को निर्धारित करती हैं। परंपरा को एक फ्रेम में बांध कर नहीं रखा जा सकता और परंपराएं एक नहीं बल्कि अनेक रूपों में होती है। परंपरा मानने के लिए बाध्य किया जाता है और उसे न मानने वालों को बाहर कर दिया जाता है। पंरपरा में एक निरतंर परिवर्तन और विकास होता रहता है। परंपरा में जब गुणात्मक परिवर्तन एक विशेष बिंदु पर पहुंच जाता है तब वहां से आधुनिकता आरंभ होती है। इसे ही सामान्यत: आधुनिकता माना जाता है।

परंपरा और रूढी का जिक्र करते हुए उन्होंने माना कि दोनों में अंतर करना जरूरी है। उन्होंने पेड़ का उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे पेड़ के पत्ते झड़ जाने के बाद नये पत्ते आ जाते है। उसी प्रकार परंपरा निरंतर जीवित रहती है। झड़े हुए पत्तों को समेटकर रखना रूढ़ी को दर्शाता है। आधुनिकता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि पश्चिम में यूरोप में 17 वीं शताब्दी से आधुनिकता का विकास हुआ है। चित्रकला, मूर्तिकला सहित सभी कलाओं का विकास आधुनिकता की ही देन है। परंपरा और विज्ञान में भेद किये जाने की आवश्यकता का

उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि परंपरा आस्था पर तो विज्ञान तर्क पर आधारित होता है। आधुनिकता और साहित्य के संबंध पर चर्चा करते हुए उन्होंने 1857 के बाद आये परिवर्तन और उसके बाद लिखे गए साहित्य को आधुनिक साहित्य माना।

भारतेंदु काल में लिखे गए साहित्य की समीक्षा की जरूरत बताते हुए उन्होंने कहा कि 20 वीं सदी से पहले हिंदी में आधुनिकता प्रारंभ नहीं हुई थी। निराला, प्रेमचंद, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद के लेखन से आधुनिक लेखन परंपरा शुरू हुई। उन्होंने माना कि आधुनिक साहित्य का संबंध विचार से नहीं बल्कि भावबोध से है। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता तथा साहित्य विद्यापीठ के प्रो. रामवीर सिंह, अतिथि लेखक तथा कहानीकार संजीव, साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह मंचस्थ थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. के. के. सिंह ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. रामवीर सिंह ने किया। इस दौरान उनके व्याख्यान को सुनने के लिए प्रो. अनिल के राय अंकित, प्रो. सुरेश शर्मा, डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी, डॉ. प्रीति सागर, डॉ. सुनील कुमार सूमन, डॉ. वीरपाल यादव, डॉ. जयप्रकाश धूमकेतु, अरूणेश शुक्ला, सुरजीत सिंह, शैलेश कदम, रूपेश सिंह, अमित राय, वीरेंद्र यादव सहित विभिन्न विभागों के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी